"पूर्वांचल के विलुप्त होते लोक अवनद्य वाद्यों का सर्वेक्षण"

आइ0 सी0 एच0 विभाग,

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली

के अन्तर्गत सम्पादित होने वाले

शोध कार्य का प्रथम प्रगति रिपोर्ट।

File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/106

शोधार्थी

शिव कुमार शुक्ल

वाराणसी, उ0 प्र0

09450178965

विस्तृत परिचय

यह सत्य है कि भारतीय संगीत का ईतिहास इतना विराट एवम् व्यापक है कि एक एक युग पर विशाल ग्रन्थों का निर्माण किया जा सकता है । लोक संगीत प्रकृति के कण कण से जुड़ा है । संगीत हमे प्रकृति में स्वतः देखने सुनाने को मिल जाता है । संगीत शिशु के जन्म से शिशु के साथ रहती है, उसके हृदय के गति में लय और अंगों के संचालन में नृत्य की भूमिका समाहित रहती है ।

अवनद्य वाद्य का जन्म मानव सभ्यता से ही सम्भव हुआ है जिस प्रकार मानव सभ्यता का विकास होता गया साथ ही लोक पारम्परिक संगीत में प्रयोग होने वाले लोक बाध्य समाज में केवल उत्सव और त्योहारों तक ही सीमित नही रहा बल्कि मनोरंजन का साधन भी बन गया ।

इसमें अवनद्य वाद्यों का अविष्कार,निर्माण,विकास,बजाने का तरीका, उपयोग आदी का विस्तृत वर्णन के साथ साथ वाद्य के कलाकारों का ऑडियो वीडियो डाटा इत्यादि का संकलन करना है ।

लक्ष्य

आधुनिक युग में जँहा पश्चिमी सभ्यता का विकास जोर शोर से हो रहा है वहीं हमारी लोक पारम्परिक सभ्यता,संस्कृति और संगीत विलुप्त होती जा रही है । चुकी लोक संगीत के कलाकार शिक्षित नही होते थे जिसके कारण ओ अपनी लोक वादन परम्परा को संजो कर संग्रह नही कर सके । जैसे - जैसे लोग गावँ को छोड़कर शहर के तरफ भागने लगे वैसे वैसे इस परम्परा में ह्रास होने लगा और आज लोक परम्परा की संगीत शैली में प्रयोग होने वाले लोक अवनद्य वाद्यों का प्रयोग कम और कुछ वाद्य का दर्शन भी दुर्लभ हो गया है ।

हम अपने लोक अवनद्य वाद्यों की परम्परा के माध्यम से अपनी सभ्यता,संस्कृति,उत्सवों,पर्वों को किस प्रकार मनाते थे यह कलाकारों का चित्र,ऑडियो,वीडियो रिकॉडिंग आदि का संग्रह संकलन किया जा रहा है जिससे की वर्तमान और आने वाला भविष्य अपना बिता हुए कल को आसानी से चित्र,ऑडियो, वीडियो के माध्यम से देख सके,सिख सकें और समझ सके । यही मेरे संकल्प है ।

कार्य क्षेत्र

शोध से सम्बंधित सग्रह एवम् संकलन कार्य के लिए मन्दिरों पर बने मूर्तियों,स्तम्भों पर बने चित्र, संग्रहालयों का भ्रमण किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है --------

i) सारनाथ मन्दिर वाराणसी ।

ii) बिहार स्थित कैमूर जिला के मुंडेश्वरी मन्दिर और संग्रहालय

iii) भारत कला भवन संग्रहालय बी. एच. यू. वारणसी

iv) बोध गया विहार के मन्दिर ।

v) सम्बंधित कुछ जिलों का भ्रमण और कलाकारों से वार्तालाप ।

vi) संगीत नाटक अकादमी संग्रहालय नई दिल्ली का भ्रमण ।

शोध - प्रविधि

i) सामान्य सर्वेक्षण

ii) तथ्य संकलन

iii) साक्षात्कार

iv) सीडी के माध्यम से

v) इंटरनेट के माध्यम से

vi) चलचित्र एवम् अन्य संचार के माध्यम से

ग्रांट स्वीकृति से मई 2016 तक सम्पादित किये गए शोध कार्य की रूप रेखा

1. शोध विषय से सम्बन्धित कार्य ।

I.अपने शोध विषय से सम्बंधित विभिन्न शोध सामग्री संकलित किये ।

II. अपने शोध के लिए कुछ गुणीजन एवम् विद्वानों से सम्बंधित विषय पे चर्चा एवम् अध्याय विभाजन के लिए मार्गदर्शन भी लिया

III.पुस्तकालयों का भर्मन तथा अपने शोध विषय से सम्बंधित पुस्तकों का अध्य्यन ।

IV.शोध से सम्बंधित कुछ चित्रों का संकलन ।

V.कुछ लोक कलाकारों का वीडियो का संग्रह ।

VI.कुछ प्रमुख कलाकारों से अपने शोध विषय से सम्बंधित शाक्षात्कार ।

2. अभीतक के ग्रन्थालयों का विवरण जिनमें अध्य्यन और संकलन का कार्य सम्पन्न हुआ

i. ज्ञान प्रवाह सांस्कृति अध्ययन एवम् शोध केंद्र वाराणसी ।

ii. भोजपुरी अध्य्यन केंद्र बी० एच० यु० वाराणसी ।

iii. केंद्रीय पुस्तकालय बी० एच० यु ० वाराणसी ।

.

3. अध्ययन किंए गए मूल पुस्तकों एवं प्रतिकाओं की सूची-

क्र0सं0	पुम्तकालय	ग्रनथ/पुस्तक	लेखक/लेखिका	प्रकाशक	संस्करण
1	केन्द्रिय पुस्तकालय का0 ही0 वि0 वि0, वाराणसी	भारतिय संगीत वाद्य	प्रो0 लालमणी मिऋ	भारतीय जनपथ, नई दिल्ली	2012
2.	भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, का0 हि0 वि0 वि0, वाराणसी	बिहार के लोक संगीत में वाद्यो की परम्परा एवं पयोग	डा0 अनामिका कुमारी	कला प्रकाशन, वाराणसी, हीन्दी ग्रन्थ अकादमी	2015
3.	केन्द्रिय पुस्तकालय का0 ही0 वि0 वि0, वाराणसी	तालो का शास्त्रीय विलोचन	डा0 अरुण कुमार सेन	मध्य प्रदेश	1989
4.	भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, का0 हि0 वि0 वि0, वाराणसी	भोजपुरी जनपद	श्रि अवधेश प्रधान	भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, का0 हि0 वि0 वि0, वाराणसी	अक्टुबर 2012

अध्ययन पत्रिकाओ का विवरण

क) आजकल साहित्य और संस्कृति मासिक।

ख) संगीत मासिक पत्रिका हाथरस।

4. **सम्बन्धित शोध विषय हेतु संगोष्ठी मे सम्लित होने का विवरण -**

संगीत नाटक अकादमी, द्वारा आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी एवं समारोह दिनांक 25 मार्च से 27 मार्च 2016

5. **लेखन कार्य** – शोध प्रबन्ध से सम्बंधित कुछ जनपद के गांवों में जाकर गुणीजन कलाकारों से जानकारियों का संकलन,वाद्यों की बनावट,प्रयोग,बोलों का चयन,विलुप्त होते लोक वाद्यो का कारण एवम् सरक्षण का उपाय इत्यादि के बारे में जानकारियों का संग्रह किया गया ।

6. **विडियो रिकार्डिंग** - सम्बंधित जनपदों में से कुछ जनपद के प्रमुख कलाकारों का ऑडियो वीडियो रिकार्डिंग किये जिसका कुछ अंश रिपोर्ट के साथ संगलग्न है ।

7. **लोक संगीत** - से जुड़े क्षेत्रीय कार्यक्रम में भागीदारी के साथ-साथ कलाकारों से मिलना औरे लोक वाद्यों के भविष्य पर भी विस्तृत पे चर्चा किया गया ।

शोधार्थी-

शिव कुमार शुक्ल
वाराणसी, उ0 प्र0
आइ0 सी0 एच0 स्कीम- 106/2015-2016
9450178965